वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 42	Year 4	Volume 6	March 2016 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 120-see page 5

विचार

शिव कौन है?

यर्जु वेद का मन्त्र है जो कि हम सन्धया में दोनो समय बोलते है

ओं नमः शम्भवाय च, मयोभवाय च, नमः शंकराय च,
मयस्कराय च, नमः शिवाय च, शिवजराय च।।

इसका अर्थ है, नमस्कार है कल्याण करनेवाले को, नमस्कार है सुखों के दाता को, नमस्कार है शान्ति के भण्डार को । अर्थात ईश्वर को कल्याणकारी, सुखों के दाता और शान्ति के भंडार कह कर उसे वन्दना, प्रणाम किया गया है। वेदों में निराकार, अजन्मा ईश्वर को उसके गुणो के आधार पर सैंकड़ो ही नामों से पुकारा गया है, शिव भी उन नामों में एक है। Shiva is the name of God because He is all Bliss and the Giver of happiness to all हम शिव कहकर उस की अराधना करें इस में कोई हर्ज नहीं पर जब ईश्वर का कोइ आकार ही नहीं न ही जन्म लेता है तो उसे अलग अलग रूपों में दिखाना, उसके शादी विवाह, सन्तान उत्पति दिखाना, उस महान सर्वव्यापक ईश्वर का अपमान है।

शिव भक्ति भी यही है कि हम जीवन में कल्याणकारी मार्ग पर चलें, दूसरों के लिये सुखकारी बने और शान्ति का स्त्रोत वनें न कि अशान्ति का। इस लिये शिवरात्री के दिवस पर मानव कल्याण के कार्य जैसे कि––अपहजों को जीवनके साधन दिलवाना, रक्त दान शिविर, किसी गरीब कालोनी में मैडिकल चैक अप शिविर, सामूहिक विवाह आदि। उस कल्याणकारी ईश्वर के नाम पर हजारों लिटर दूध को बहाना और नष्ट करना शिव भक्ति नहीं हो सकती।

यह विचार हैं आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद के

Contact:
Bhartendu Sood, Editor, Publisher & Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

उत्तम जीवन कैसे जीयें – गीता का संदेश

तुम अपने आप को ईश्वर को अर्पित करो, यही सब से उत्तम सहारा है। जो इस बात को जान जाता है वह भय, चिंता और शोक से सदा के लिये मुक्त हो जाता है। तू जो कुछ भी करता है, उसे ईश्वर को अर्पण करता जा। ऐसा करने से तू अहंकार, मोह और क्रोद्ध से दूर रहेगा जो कि परम आनंद को देने वाला है।

न यह शरीर तुम्हारा है, न तुम इस शरीर के हो। यह पांच तत्व अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी और आकाश से बना है और इसी में मिल जायेगा। परन्तु आत्मा न मरने वाली है, तुम यह आत्मा हो और मृत्यु के प्श्चात तुम्हारी यह आत्मा तुम्हारे कर्मोनुसार किसी और शरीर को धारण कर लेगी।

तुम्हारा क्या गया जो तुम रोते हो? तुम क्या लाये थे जो तुमने खो दिया। तुमने क्या पैदा किया था, जो तुम समझते हो नाश हो गया। जो है ईश्वर का दिया है। खाली हाथ आये थे और खाली हाथ चले जाओगे। जो आज तुम्हारा है, वह पहले किसी और का था। तुम्हारे जाने के बाद किसी और का होगा। तुम इसे अपना समझ कर इस के मोह में फंसे हो और अहंकार कर रहे हो, यही तुम्हारे दुख का कारण है।

प्रत्येक मनुष्य की अन्तिम अभिलाषा सुख एवं आनन्द की प्राप्ति है और व सुख तथा आनन्द भी क्षणिक नहीं होना चाहिये बल्कि स्थिर, स्थायी एवं शाशवत होना चाहिये अर्थात् आज है परन्तु कल नहीं है ऐसा सुख मनुष्य को नहीं चाहिये। इस अभिलाषा को पूर्ण करने के लिए ही मनुष्य पदार्थों का संग्रह करता है, वह सदैव उन्हीं कार्यों को करता है जिससे उसे अधिक से अधिक धन एवं वस्तुयें प्राप्त हो जायें। यह सत्य है कि मनुष्य का जीवन उनके बिना चलना कठिन है। संग्रह के लिये शास्त्रों में इन्कार नहीं किया गया परन्तु वह सप्पूर्ण संग्रह न तो जीते–जी उसके लिये है और न ही मरने कि पश्चात् उसके लिये है। भगवन् कृष्ण ने गीता में अर्जुन को उपदेश देते हुये कहा है कि–

''लोकसंग्रमेवाऽपि समपश्यन् कर्तुमर्हसि।''

तुम्हें लोक कल्याण के लिये संग्रह करना चाहिये व निष्काम भाव से कर्म करना चाहिये अर्थात् तुम्हारा संग्रह लोक कल्याण में हेतु होना चाहिये। यदि तुम्हारे कर्मों की दिशा ठीक है तो कर्म तुम्हारे लिये बन्धन का कारण नहीं बन सकते। ऋषियों के जीवन जीने की यही कला थी। वेद का ऋषि कहता है कि –

ईशावास्यमिदं सर्व यत्किच्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुच्चीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम्।।

इस विश्व में जो कुछ भी जड़–चेतन, चराचर है व ईश्वर का ही है। हम अपने को स्वामी न समझे। ऐसी भावना रखते हुये यदि तुम आसक्ति का त्याग करके उस परमात्मा से सतत युक्त होते हुये धर्मपूर्वक, गिद्ध दृष्टि का त्याग कर विषयों का उपभोग करते हो तो तुन्हारे कार्य कभी भी तुम्हारे लिये दुःख का कारण नहीं होंगे। भगवान् का यह सनातन सन्देश ऋषियों के जीवन में साक्षात् चरितार्थ हुआ। जब मनुष्य स्वयं

को अपने मूल परमात्मा से अलग मान कर अपने को धन सम्पदा का स्वामी मानने लगता है तो वह धन–सम्पत्ति होते हुये भी सदैव अभावग्रस्त रहता है और सुख और आनन्द को खो देता है। उसे यह बोध नहीं रहता कि कि इन जड़ पदार्थों में सदैव रहने वाली सुख–शान्ति नही है। इसीलिये पहले अपने जीवन की संचालिका, बुद्धि को ही समझाना पड़ेगा। बुद्धि को समझाने का अर्थ है बुद्धि को शुद्ध करना। बुद्धि तब शुद्ध होगी जब मनुष्य सांसारिक पदार्थों का चिन्तन छोड़कर अपनी आत्मा को निराकार व सर्वशक्तिमान परमात्मा के साथ जोड़ता है। इसलिये गीता का उपदेश है कि अपनी बुद्धि को

युक्त कर लो अर्थात परमात्मा से जोड़ लो क्योंकि बिना युक्त हुये न शान्ति मिलेगी न सुख।

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।

न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्।।

जो युक्त नहीं उसके पास शुद्ध बुद्धि नहीं, जिसके पास शुद्ध अर्थात् सात्त्विक बुद्धि नहीं उसके पास भावना नहीं– वह परमात्मा के अस्तित्व को नहीं मानता, जो अपने मूल परमात्मा को नहीं मानता उसे शान्ति कहाँ से मिल सकती है? जिसे शान्ति नहीं उसे सुख भी नहीं मिल सकता, जिसे सुख नहीं वा आनन्द को प्राप्त नहीं कर सकता, आगे श्रीकृष्ण कहते है–

अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते।

जो परमात्मा से युक्त नहीं वह कामनाओं से प्रेरित होने के कारण उनके फल में आसक्त हो जाता है और सदैव फलप्राप्ति का ही चिन्तन करते हुये स्वयं उसमें बंध जाता है, क्योंकि यह केवल अपने लिये ही सोचता है। इसलिये मनुष्य, योग, ज्ञान और भक्ति के द्वारा अपनी बुद्धि को परमात्मा से जोड़ दें। ऐसा करने से शान्ति, सुख और आनन्द उसे प्राप्त हो जायेंगे जो मनुष्य की सहज अभिलाषा है।

Character is what you do in the dark---- Mahatma Gandhi

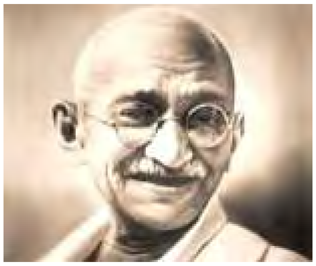

A memorable story reflects this admirably. A famous mason and his son were building a castle wall. One day they ran out of mortar for the foundation's last stone. The son was asked to prepare it. He demurred saying that there was enough mortar left over from the walls. His father pointed out that it would not be strong enough. 'No one will know', the boy persisted. Answered the father, ' Two will know and it will haunt them -- you and me!'

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगडी, कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :

HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH, GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL

& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines

Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh

Tel.: 0172-2708497

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

Publisher & Printer Bhartendu Sood **Printed at** Umang Printer, Plot No. 26/3, Ind. Area, Phase-II, Chd. 9815628590
Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

मधुर सम्बन्धों के लिये इन बातो पर ध्यान दें

नीला सूद

मधुर सम्बन्ध जीवन में प्रसन्न रहने की कुंजी है। यही नहीं जीवन में सफल होने के लिये मधुर सम्बन्ध बहुत अहम रोल निभाते है। पर ये कई कारणों से खराब हो सकते हैं, उन में मुख्य कारण है हमारा शीघ्र ही क्रोधित हो जाना। इस का एक उदाहरण यहां दे रहीं हूं।

यह बात उस समय की है जब सन्यासी त्याग का जीवन जीते थे और भिक्षा पर ही गुजर करते थे। एक बार ऐसे ही एक सन्यासी किसी के घर में भिक्षा मांगने गये। वहां सास बहु में उंच नीच होती रहती थी। गृहणी ने भिक्षा देते सोचा क्यों न सन्यासी महाराज से अपनी सम्सया का हल पूछ लूं। वह सन्यासी से बोली––महाराज एक बात बताईये कि घर में लड़ाई झगड़ा, तूं तें मैं मै, क्यों होता है? सन्यासी कुछ देर तक गृहणी की तरफ देखते रहे फिर तपाक से बोले––मैं भिक्षा लेने आया हूँ, न कि तुम्हारी इन फजूल की बातों का उत्तर देने। गृहणी सन्यासी का उत्तर सुनकर दंग रह गई और फिर गुस्से में बोली। कितने घमंडी हो, एक तो मांग कर खाते हो और उपर से देने वाले के साथ इस तरह पेश आ रहे हो। तुम्हे कुछ इन्सानयित सीखनी चाहिये। सन्यासी उस की बात सुनकर मुस्करा दिया और बोला––यही है तुम्हारे प्रश्न का उतर। लड़ाई झगड़ा, तूं तें मैं मै, इस लिये होती है कि हम सहनशीलता और विनम्रता दिखाने की बजाये, अहंकार और द्वेश के वशीभूत हो कर दूसरे पर बरसने की करते हैं और कोशिश करते हें कि उसे ब्याज समते वापिस करें।

ऐसी स्थिति हम सब के साथ आती है जब दूसरों द्वारा किया गया कृत्य या बात हमें क्रोधित कर देती हैं। हम कितना क्रोध करते हैं यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम अपने आसपास के माहौल के बारे मे कितने असहनशील हैं। अकसर देखा गया है कि ऐसे मौकों पर हर एक व्यक्ति अलग अलग तरह से पेश आता है। उदाहरण के लिये कुछ एक दम उत्तेजित हो कर जवाब दे देते हैं। केछ क्रोधित होकर उंचा बोलना शुरू कर देते हैं। कुछ गुस्से मे पागल होकर गालियां देनी शुरू कर देते हैं और कुछ सब सीमाओं को लांघकर मारपीट भी कर बैठते है। यह भी सत्य है कि हम में बहुंत सारे अपने किये पर पछताते हैं व इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैंकि इन हालात में बेहतर तरीके से पेश आया जा सकता था जैसे कि महान व्यक्तियों के जीवन की निम्न घटनायें बताती है।

एक बार अबराहम लिंकन का सैक्टरी देश के मुख्य सेनापति के साथ किसी बात पर बहुत क्रोद्धित हो गया । बहुत गुस्से में उसने अबराहम लिंकन के कमरे में प्रवेश किया और सारी बात उन्हें बताई। अबराहम लिंकन ने सैक्टरी को कहा कि वह मुख्य सेनापति को अपने मन की भावनायें बताते हुये पत्र लिखे। सैक्टरी ने जब देखा कि अबराहम लिंकन उनके पक्ष में है, उसने बहुत गुस्से वाला पत्र अभद्र भाषा में मुख्य सेनापति को लिख दिया । जब अबराहम लिंकन को दिखाने के लिये लाया तो लिंकन बोले––" तुमने बहुत अच्छा किया जो कि अपने मन की बात लिख डाली। पर इसे अब लैटर बोक्स मे डालने की बजायें, सामने जल रही अंगिठी मे डाल दो। "

सैक्टरी हैरान था। अबराहम लिंकन बोले––"जब भी मैं गुस्से में होता हूं तो ऐसा ही करता हूं। पत्र लिखता हूं और फिर फाड़ देता हूं। अब कल फिर से पत्र लिखना। सचमुच अगले दिन लिख हुआ पत्र पहले पत्र से बिलकुल अलग था। जब भी आप क्रोद्ध में हों तो कोई भी निर्णय न लें और न ही उस विषय पर कोई कदम लें । जब आपका क्रोद्ध शांत हो जाये तो आगे बड़े। ऐसा करना अच्छे सम्बन्ध कायम

करने में बहुत सहायक सिद्ध होता है।

कहतें हैं, सुकरात एक बार अपने मित्रों व अनुयाइयो को भाषण दे रहे थे। भाषण सात आठ घटें तक चलता रहा। सुकरात की पत्नी जो चिड़चिड़े स्वभाव की थी यह सब देखकर परेशान थी उसने एक ठण्डे पानी की बाल्टी सब के सामने सुकरात के सिर पर उडेल दी। सुकरात के मित्र व अनुयायी ऐसा अभद्र व्यवहार देख कर दंग रह गये पर महात्मा सुकरात ने सब को यह कह कर शांत कर दिया कि उनकी पत्नी को पता लग गया था कि सात आठ घंटे भाषण देने के बाद मेरा सर बहुत गर्म हो गया था व इसका ईलाज करने के लिये उसने ठन्डे पानी की बाल्टी मेरे सर पर उढेल दी।

ऐसी ही एक घटना सतं तुका राम के जीवन से है।कहते हैं कि सतं तुका राम की पत्नी भी गुसैले स्वभाव की थी। एक बार जब सतं तुका राम शहर जा रहे थे तो उनकी पत्नी ने उन्हे शहर से गन्ने लाने के लिये कहा। सतं तुका राम ने काफी सारे गन्ने लिये व घर की ओर वापिस चल दिये। थे तो वे संत, रास्ते मे जो भी मिलता उसे एक गन्ना दे देते। जब घर पहुचें तो एक ही गन्ना रह गया था जो कि उन्होने प्यार से अपनी पत्नी को भेंट किया। एक गन्ना पाकर पत्नी का गुस्सा स्वभाविक था व गुस्से मे उसने वह गन्ना सतं तुका राम के सिर पर दे मारा व गन्ने के दो टुकड़े हो गये। सतं तुका राम ने बड़े प्यार से एक टुकड़ा पत्नी की ओर बड़ाते हुये कहा–––वाकई ही तुम मेरा बहुत ध्यान रखती हो,वरना मुझे इसके दो टुकड़े करने पड़ते। एक तुम्हारे लिये व एक मेरे लिये। यह भी सत्य है कि हम सब महात्मा सुकरात या संत तुका राम नहीं बन सकते पर उसका कुछ अंश भी अगर जीवन में धारण कर लेते हैं तो बात बन जाये।

ऐसी स्थिति मे क्या किया जाय, इसका जवाव महात्मा बुद्ध के जीवन की एक घटना से मिलता है। एक बार महात्मा बुद्ध अपने शिष्यों के साथ एक जगंल से गुजर रहे थे। उन्हे प्यास लगी तो उन्होने अपने एक शिष्य को पास के एक तालाब से पानी लाने को कहा। कुछ देर बाद शिष्य खाली वापिस आ गया व बोला तालाब का पानी मिटटी वाला है। महात्मा बुद्ध ने उसे कुछ देर ठहर कर जाने को कहा। इस बार पानी साफ था।। महात्मा बुद्ध ने समझाया कि पिछली बार जब तुम गये थे, तो एक बैलगाड़ी यहां से गुजरी थी स्वभाविक है कि तालाब के उपर से गुजरने के बाद सारा पानी हिल गया पर कुछ देर बाद मिटटी बैठ गई व उपर का पानी साफ हो गया।ʿ इसी तरह दैनिक जीवन में कोई बात आपको क्रोद्धित कर देती है तो एकदम प्रतिक्रिया (react) न करें। थोड़ी देर के लिये रूक जायें अपने आपको किसी और कार्य मे लगा दें।

ऐसा करने से आप ऐसी बहुत सी परीस्थतियों से बच सकते हैं जिनके लिये आप को बाद में पछताना पड़े या सबंधो में एक दरार बन जाये।

Intolerance and rejection are two sides of the same coin. This has been going around in our society for ages. The former gives rise to the latter.

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 100 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। पनि चोदे अवश्य दे
2. **आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–**

   वैद्यीछ थषैूघषथश, चैणथ्रअए भअणख ोढ णिद्यीअ ।/च नौ. 3112975979 डिच चौद्यै – चबनि0280414

   बषअथैणद्यू शौाीद्य, दिबबिअणख – 0272104000055550 डिच चौद्यै – बिकल0000272

   बषअथैणद्यू सौद्य, पूणझअभ रु सीणद्यष बअणख – 02421000021195, डिच चौद्यै – पसबि0000242
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया अथ फअ्र **का चैक भेज दे।**

How to control our karmas

Neela Sood

Though there is a general feeling that heaven and hell are the locations where the virtuous find happiness and sinners languish in suffering. But, in reality they are states of the existence of a man. State of happiness signifies heaven and the condition in which man feels sorrowful is hell. If we do some good act the reward will be joy and likewise our bad deeds result in sorrow and agony.

But how to ensure that we remain saved from bad deeds and do only those acts which bring good to others or say are virtuous. Best way is to do audit of our actions in the same way as auditors audit the performance of Business Houses/shops.

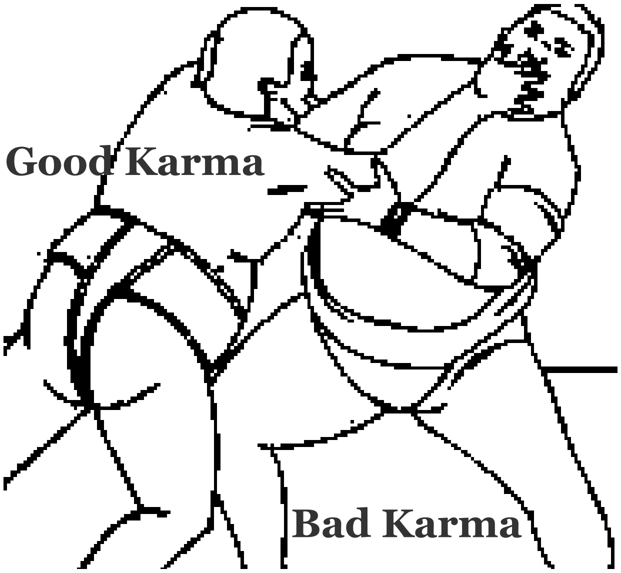

We should question ourselves each night and answer honestly. "Was I completely sincere today? Was I humble, patient, kind and generous? Was I frank and courageous, obedient and faithful? Or was I dishonest, proud, impatient and quarrelsome, unkind and miserly, deceitful and cowardly, disobedient and disloyal?" The personal audit takes five minutes. You are alone and forthright with yourself. Nobody shames or embarrasses you. You confess to yourself only, and the exercise comes to be a gradual self-purification and spiritually rewarding process. Though, our endeavor should be to do only good deeds but still being human we are prone to do mistakes or unworthy acts also. However, what we can ensure is that at the end of each day we find ourselves on the credit side, that our good deeds outweigh our shortcomings and this credit increases with every passing day. If it happens then our path is virtuous.

How to do it? There is a story about a young boy who had come to a house to buy old newspapers. He weighed the pile and calculated the value at Rs.136/-. From his purse he took out Rs135/- and fished around in his pockets for the remaining rupee. The Rs.135/- were accepted by the seller and he was told to forget about the rupee. He left but hardly fifteen minutes had passed when he was again standing before the seller.. He had cycled to the nearest market, changed money, and was back to pay his one rupee! When the seller asked why he took so much pain when he himself had told him to forget about this small amount. "Better to pay debts in this world than to be answerable in the next!" he said by way of explanation.

Another kind of personal audit was suggested by a wise man to a conscientious seeker. "For every sin you commit, drive a nail into the wall of your room. And for every good deed, draw out a nail. At the end of the month you will know by the number of nails in the wall whether your sins were greater or your good deeds outdid the bad deeds." This the man did faithfully. At month end he happily found he had no nails in the wall, but was left with a scarred wall, where the nails had been wrenched out. He went back to the wise man and reported: "I have no nails left but my wall is damaged". "That" the wise man said "is the scar left on your soul even though your sins and good deeds may seem balanced".

Our efforts should be to dim this scar.

Editorial

Rajya Sabha needs relook

The ongoing selection of candidates for Rajya Sabha is before us. To make the things worse, the story of Vijay Mallaya, a Rajya Sabha MP who used his diplomatic passport to escape from the clutches of law of the land, is grabbing headlines in the media. The one who was a law maker is a law breaker now. Under this situation BJP"s Kurukshetra MP, Mr Raj Kumar Saini's call for abolishing Rajya Sabha can't be dismissed as bizarre. He has definitely raised a very thought provoking issue which merits good debate on the usefulness of Rajya Sabha in the current political culture in the country.

Undisputedly, sixty five years after the august institution of Parliament began functioning, it would be too much to ask for removing one of its vital organs, Rajya Sabha, but then doctors also amputate the part which looks affecting the functioning of other organs. The events of the last one decade are the pointer to the unhealthy condition of Rajya Sabha where its existence is threatening the process of legislation, most accepted way to form laws in any democracy. The matter needs to be examined from the various angles and prime consideration being our Constitution.

The first point that comes to mind is –can we really wind up Rajya Sabha? Well, the wise men who designed our constitution did not want it to be rigid like that of USA, otherwise they would not have made the proviso of article 368 which empowers Parliament to amend the constitution without changing the basic structure, as enshrined in our Preamble. The fact that country has seen 99 constitutional amendments in the last 65 years against 27 amendments in the constitution of USA in the past 225 years itself corroborates the view point that nothing in our constitutional is static except its basic structure.

Second point is –how one can think of winding up Rajaya Sabha when any constitutional amendment is not possible without its being processed and approved in Rajya Sabha. Answer is simple—as we constituted committee of experts headed by Dr. B.R. Ambedkar to draft constitution in 1946, likewise a committee of constitutional experts can be reconstituted to examine the working of democracy without the Upper House or second chamber..

Third point is the impact of doing away with Rajaya Sabha on our Federal structure. Without any doubt, the existence of Rajya Sabha adds to making our constitution federal, since its members are elected by the state legislatures. Not only this, Under Article 249, if the Rajya Sabha passes a resolution with not less than 2/3 majority, authorizing Parliament to make laws on any state subject, Parliament has to legislate on that subject. Similar position is under Article 252. But, then it needs to be investigated whether our members of Rajya Sabha truly represent the states or it has become the tunk yard for the failed politicians or stooges of the political bosses in the country , be it the Congress or BJP. BJP Kurukshetra MP, Mr Raj Kumar Saini was right on dot when he said that people were reaching the upper house after paying money and pleasing their political masters. This statement from a man who himself is a member parliament cannot be dismissed lightly. Mr Mallaya, who has absconded

after having defaulted to the tune of Rs **9000** crore to the financial institutions, happens to be a member of Rajya Sabha. It is not difficult to guess how he was inducted in to this august house. Again Lok Sabha has members from all the states. Why it should be presumed that Lok Sabha members are not in position to safeguard the interest of the states they represent, as directly elected members and only indirectly elected members can protect the interest of states.. It happened many a times when Karnatka, Tamil Nadu members joined hands, cutting across party affiliations to strongly present the case of their respective states.

Fourth point is—has the situation come to such a pass which may warrant winding up of Rajya Sabha. Answer is: the party politics has changed in the country over the decades. Regional parties have grown in strength and they are seen to represent the aspiration of people. There is very rare possibility when the party who has the majority in Lok Sabha will have the majority in Rajya sabha too, as was the trend in good old days. It means an environment of confrontation between the ruling outfit in Lok Sabha and its opposition through its members in Rajya Sabha. What you can't do directly, do it indirectly, as we are seeing for the last one decade and the situation becomes worse when there is no continuity of the same party government in the centre. Recently, when the reporter asked the Congress spokesperson why it was not allowing the parliament to function, the argument given by him was that BJP also tried similar obstructionist tactics in the past. Tomorrow when other party comes at the centre, and the Rajya Sabha is flooded with BJP members, same argument will be advanced by BJP. There is no end to it. Egos of the leaders overtake national interest. Under the situation why almost 1200 crores of taxpayer's money should be spent annually on the institution which has hardly any positive contribution rather has a nuisance value. We are not USA or UK to have the luxury of second Chamber if it is not serving its usefulness. One of the options can be to increase the number of Lok Sabha members from present 550 to 800 after winding up Rajya Sabha. It needs to be appreciated that this number of 550 was fixed when the country's population was 35 crores which has now swelled to 120 crores which merits increase in number to have better representation of masses in the Law making chamber.

Fifth point is –if we do not abolish this august institution what can be the alternative. We can always think of some modifications with regard to the powers of Rajaya Sabha. For example, at present Money bill can be introduced only in Lok Sabha and Rajya Sabha can give recommendations which Lok Sabha may or may not accept. Likewise National budget and grants for various Miniseries can be discussed but not

Mr. Vijay Mallaya is Member Rajya Sabha. One can guess how he managed his entry

voted in Rajya Sabha. Council of Ministers which runs the country is responsible only to Lok Sabha. On the same lines, few other bills and constitutional amendments/ordinances can be added to its list. Let there be checks and balances but not veto power to obstruct the duly elected government from implementing its plans irrespective of whether it is NDA or UPA or any other government. Similarly, any member who is rejected in Lok Sabha elections should not be allowed to be Minister on the strength of his Rajaya Sabha membership. It amounts to ignoring people's verdict against a an aspirant for the sake of political convenience.

Those who have the fears that in the absence of Rajya sabha, there will be no checks or

the majority government in the centre, simply forget that in most of the countries with democratic governments, there is only a single Chamber/house. Then any government which is at the centre is the elected government which comes to power on the strength of absolute majority. If we do not have faith in the directly elected government then it is an insult to the institution of democracy. Last, we forget that that we have an independent and powerful judiciary which has the powers even to set aside the decision taken even in the both houses of parliament if it violates the spirit of constitution. Setting aside of the emergency proclaimed by Late Indira Gandhi in 1975 who commanded absolute majority in both the houses of the parliament and then the recent National Judicial Appointments Bill 2015 which had been passed in both the houses of parliament are the shining examples of Judiciaries role in Indian democracy.

Without any doubt, second chamber was created to add value to the decision/law making but in the changed circumstances it has acquired more of a nuisance value. Therefore, we need to have the committee of Constitutional experts to examine what can be done to Rajya Sabha in the changed circumstances.

****

Educated women need to do introspection

Ms Neela Sood

Majority of women folk in our country continue to be suppressed and subjugated but consequent to the changes in last 60 years after independence, 10-20% are over-empowered and enlightened to know their rights and duties.

Women empowerment is not empowering own family

They need to give a thought.

(1) If you are young, why do you want to take the advantage of separate queue ?

(2) You are travelling by city bus which has provided separate seats for females. You find an old man standing. Don't you think it is the duty of young among us to give him a seat?

(3) You being a privileged government employee who gets 2 years leave at the time of first two deliveries. Don't you think you need to exercise similar consideration for your maid and give her at least three months leave with pay?

Point is that we also need to be sensitive. Rights and duties go hand in hand. We also need to do our bit should not pose as **'bechari'** all the time

सम्पादकिय–2

''वंड छकना'' से ''मैं छकना''

बात पिछले महीने की है । मैं चंडीगढ़ के आर्य समाज के मासिक प्रोग्राम में गया था। आजकल आर्य समाज में गाने ही होते हैं, उपदेश खत्म हो गयें हैं। गाने सुनो, तालियां मारो, प्रीतिभोज खाओ और अगले प्रोग्राम की सूचना ले कर घर को

गुरू नानक देव ने मानव सेवा और वंड छकने की बहुत अच्छी शिक्षा दी। और अच्छी बात यह थी कि अनुयाई इसे और उत्साह से आगे ले गए।

आओ। जो भजन गाने वाले सज्जन थे उन्होने एक घटना सुनाई कि किस तरह हाल ही के जाट अन्दोलन के दौरान नैशनल हाईवे पर फसे सैंकड़ो लोगों को पानीपत में गुरूद्वारे वाले खुद आकर ले गये। गुरद्वारे में स्थान दिया और बहुत सेवा भाव से खाना खिलाया। गायक महोदय ने गुरू नानक देव की बहुत प्रंशसा की कि कितनी अच्छी बात उन्होने अपने मत के लोगों को सिखाई। पर साथ ही वह हिन्दु धर्म के मन्दिरों की अलोचना करने से नहीं चूके कि क्या फायदा लाखों रूपये के मुकट मूर्तियों को चड़ाने का अगर हम में मानव सेवा की भावना ही नहीं। बात उनकी सोलह आने ठीक थी पर मुझे खेद इस बात का था कि उन्होने अपने आर्य समाजों के बारे में कुछ नहीं कहा। मैं उन्हे यही कहूंगा मून्दिर तो फिर रोज खुलतें हैं, गरीब की फिर कुछ पूछ है, भंडारे आदि भी करते हैं। पर इन आर्य समाजों का क्या हाल है , वे कितनी समाज सेवा में लगें हैं। जानिये आर्य समाज क्या था और इस महान सस्था को इस हाल पर लाने वाले कौन हैं। बात तो आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयाननद ने भी वंड छकने की ही दी थी पर अगर हम उनके अनुयाईयों ने इसे मैं

स्वामी दयानंद ने भी मानव सेवा और वंड छकने की वैसे ही शिक्षा दी थी जैसे गुरू नानक देव ने दी थी। पर अनुयाईयों ने इसे "मै छकना" मे बदल दिया

छकने में परिर्वतित कर दिया तो दोश महर्षि दयानंद का नहीं।

जैसे मैं देखता हूं, पिछले 1000 सालों में भारत में दो क्रांतीकारी पुरूश हुये जिन्होने हिन्दु सर्म्पदाये को एक नई दिशा दी। एक गुरू नानक देव और दूसरे महर्षि दयानंद सरस्वती। दोनो ने हिन्दु सम्प्रदाय में पण्डितों द्वारा अपने स्वार्थ के फैलाई कुरितियो, अन्धविश्वासों और पाखण्डों को निशाना बनाया और कुछ वैसा ही प्रहार समानन्तर धर्मो के अन्धविश्वासों और पाखण्डों पर भी निडर हो कर किया। कबीर ने सहित्य में ऐसे विचार तो प्रकट किये पर शायद इस दिशा में कार्य नहीं किया।

गुरू नानक देव के अनुयाईयों ने बाद में सिक्ख मत की स्थापना की और अपनी एक पहचान बना कर हिन्दु मत

से अलग कर दिया। स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की पर उनके अनुयाईयों ने कोइ अलग पहचान नहीं दी न ही कोई अलग मत बनाया। दोनों मतों ने ईश्वर को निराकार व अजन्मा माना, समाज सेवा और मानव सेवा पर महत्व दिया । इस कारण जब आर्य समाज बना तो सिक्ख लोग आर्य समाज के बहुत नजदीक रहे, प्रशंसक रहे।

सिक्ख मत आहिस्ता आहिस्ता फैला पर जो हम आज सिक्ख मत देखते हैं उस में गुरू नानक देव के विचारों की पूरी झलक नहीं, हां गुरू नानक देव की जिस बात ने इस मत को सब जगह सम्मान योग्य बना दिया व गौरव का स्थान दिया वह था निस्वार्थ सेवा और बांट कर खाना जिसे वंड छकना कहा गया है। इस में बांट कर खाना ऐसी बात है जो कि इस धर्म को दूसरे मतों से बहुत उपर उठा देती है। कहने का अर्थ है **ज्ञान की बातें सेवा भाव के बिना खोखली लगती है।** इस मत के लिये सब से अच्छी बात यह रही कि इस मत के अनुयाई गुरू नानक देव की इस बात को और अधिक श्रद्धा और उत्साह के साथ आगे ले गये या यूं कहे सारे विश्व में फैला दिया। वंड छकने में दो चीजें थी एक अपनी कमाई का हिस्सा देना दूसरा अपने आप सेवा करनी। इस कारण यह मत विश्व के हर स्थान पर अपना ही स्थान बना पाया।

आर्य समाज एक दम फैला और 1880 से 1920 तक भारत की 25 करोड़ जनसंख्या में एक करोड़ के करीब इसके अनुयाई बने। पर उस के बाद जिस तेजी से फैला था उस तेजी से ही पतन प्रारम्भ हो गया। कारण बहुत हैं और पर एक मुख्य कारण था मानव सेवा और वंड छकना की भावना का खत्म होना, जो 1940 से पहले आर्य समाजों में वैसे ही थी जैसे कि गुरद्वारों में देखने को मिलती है। **कहने का अर्थ है कि स्वामी दयानंद ने भी मानव सेवा और वंड छकने की वैसे ही शिक्षा दी थी जैसे गुरू नानक देव ने दी थी। इस को खत्म करने में अहम भूमिका रही गुरूकुलों से पढ़े लोगों का प्रवेश और यह माना जाने लगा कि आर्य समाज मानव सेवा के स्थान पर इन गुरूकुल वालों की ही तन,मन धन से सेवा करें । इन गुरूकुल वालों ने भी इस बात का फायदा उठाकर, पौराणिक पंडो की तरह, यह चित्र सामने रखा कि हमारी सेवा हो गई तो मानव सेवा हो गई, हमारे से गरीब कोई नहीं। और ''वंड छकने'' के स्थान पर '' मैं छकना '' की संस्कृति आर्य समाज में आ गई। और जो संस्था एक बहुत बड़ा अंदोलन थी खत्म हो गई।**

आज जो भी आर्य समाजों में थोड़ा बहुत पैसा आता है इन उपदेशकों ओर गायकों की दक्षिणा और अभिन्दनों में ही खत्म हो जाता है बाकी कुछ भगवे कपड़े पहने गुरूकुलों के ठेकेदार ले जाते हैं या श्रधालु जुटाने के लिये प्रिती भोजों में खर्च हो जाता है, ऐसे में मानव सेवा कहां होगी और मानव सेवा के बगैर यह ज्ञान की बातें खोखली हैं। इसी लिये संस्था खतम हो रही है।

Nothing in the nature lives for itself

Rivers don't drink their own water
Trees don't eat their own fruit
Sun doesn't give heat for itself
Flowers don't spread fragrance for themselves
Living for others is the rule of nature

जो ईश्वर के लिये गाते हैं

भारतेन्दु सूद

इस बारे में मुझे एक अकबर के जीवन से जुड़ी कहानी याद आती है।

प्रसिद्ध गायक तानसेन अकबर के नवरत्नों में से एक थे। एक दिन अकबर की प्रात बहुत जल्दी नीन्द खुल गई। वह महल से बाहर आ कर यमुना नदी की और टहलते हुये चल दिये। जब वह यमुना नदी के तट पर पहुंचे तो एक बहुत ही सुरीले भजन की आवाज ने उनको अपनी और खींच लिया। जैसे जैसे वह उस आवाज के नजदीक पहुंचने लगे वैसे वैसे वह

उस में डूबते गये। जब वह वहां पहुंचे तो अकबर ने देखा कि एक बृद्ध व्यक्ति, अपनी कुटिया के बाहर, बहुत तन्मयता से ईश्वर भक्ति का भजन गा रहा था। यही नहीं सब पक्षी और जानवर भी शांत हो कर भजन का आनन्द उठा रहे थे। अकबर ने अपने मन में ऐसी शांति और आनन्द अनुभव किया जिसका ऐहसास उनको पहले कभी नहीं हुआ था। भजन का गायन खत्म होने के बाद वह जब उस बृद्ध व्यक्ति के नजदीक गये तो उन्होने देखा की उसके चेहरे पर एक अलग तरह का नूर था जो कि देखने वाले को भी मन की शान्ति दे रहा था। अकबर वहां खड़ा उस को देखता रहा और उस बृद्ध व्यक्ति ने भी अकबर को देखा और अपने कार्य में लग गया। अकबर हैरान था कि सारे हिन्दुस्तान का बादशाह उसके सामने था पर उस के लिये काई असाधारण बात न थी और न ही उसने किसी उतेजना को जाहिर किया।

इस घटना ने अकबर के मन पर ऐसा दीर्घ प्रभाव छोड़ा हुआ था कि वह महल में जा कर भी उस घटना और गायक के बारे में सोचता रहा। जब दिन निकल आया तो अकबर ने अपने राज्य के प्रसिद्ध गायक और नवरत्न तानसेन को बुलाया और बोले–– मै सदैव यही सोचता था कि सारे हिन्दुस्तान में तुम जैसा गायक और कोई नहीं। पर आज एक वृद्ध व्यक्ति का भजन सुनने के बाद मुझे अपनी राय बदलनी पढ़ सही है। मैं चाहता हूं कि तुम भी जा कर एक बार उस का भजन सुनो।

अकबर बहुत हैरान हुआ जब उसने देखा कि तानसेन उस वृद्ध गायक की प्रशंसा सुनने के बाद बुरा मानने की बजाये, बहुत प्रसन्न था । वह झट से बोला––महाराज मैं समझ गया आप किसकी बात कर रहें हैं। वह और कोई नहीं मेरे गुरू स्वामी हरीदास है। मैं इस बात से और भी प्रसन्न हू कि आप को उन जैसे गायक को सुनने का अवसर प्राप्त हुआ।

अकबर कुछ देर चुप रहे फिर चुटकी लेते हुये

तानसेन से बोले——तानसेन तुम हरिदास के शिष्य तो अवश्य हो पर तुम्हारा गायन अपने गुरू की तरह नहीं है।

तानसेन सटाप से बोले——महाराज आप बिल्कुल ठीक फरमाते हैं। मैं आपने गुरू हरिदास जैसा कभी नहीं गा सकता, कारण मैं अपने महाराजा के लिये गाता हूं जब कि मेरे गुरू राजाओं के भी राजा सारे ब्रहमांड को बनाने वाला ईश्वर के लिये गाते है। जब आप उस मालिक की स्तुती में गाते हैं तो आपकी आवाज प्राकृतिक तौर पर और सुरीली हो जाती हैं और सुनने वाले के हुदय को छू जाती है।

बात को जारी रखते हुये तानसेन बोले——मैं बहुत प्रसन्न हूं कि किस्मत ने आप को उन तक पहुंचा दिया और आप उन को गाता हुआ सुन सके। क्योंकि उन जैसे गायक जो केवल ईश्वर की स्तुती में ही गाते है महल में आकर राजा की स्तुती नहीं गाते ।

यह एक सच्चाई है। कुछ समय पहले की बात है मैं एक स्थानीय आर्य समाज के मासिक विशेष प्रोग्राम में गया था । समाज ने इस अवसर पर एक व्यवसाई भजनोपदेशक को बुलाया था जो कि तबलची बगैरा के साथ आया था। उसने आधा घटां के करीब गाने गाये। उसके बाद स्थानिय मेहरचंद महाजन कालेज की भूतपूर्व प्रिंसिपल श्रीमती स्नेह महाजन ने एक पुराना भजन—— विश्वापति के ध्यान मे जिसने लगाई हो लगन, क्यो न हो उसको शांति क्यों न हो उस का मन मगन भजन गाया। सारे हाल में एक दम शांति का वातावरण छा गया और लोग ध्यान और भक्ति की मुद्रा में डूबकर भजन का आन्नद उठाते रहे। न तो कोई तवले की आवाज थी और न ही फिल्म की कोई तर्ज। यही फर्क होता है जब हम ईश्वर के लिये गाते हैं। चाहे वह दो आंखे बारह हाथ फिलम का गाना——ऐ मालिक तेरे बन्दे हम हो या फिर गुडी फिलम का ——हम को मन शक्ति दो। जब हम ईश्वर के लिये पूरी तरह लीन हो कर भजन गाते हैं तो न तो सुरीली आवाज चाहिये और नही आधुनिक गैजेटस। ऐसा ही एक भजन आज से 85 साल पहले बने सिनेमा दो आंखे आरह हाथ का है।

ऐ मालकि तेरे बंदे हम, ऐसे हो हमारे करम

नेकी पर चले और बदी से टले, ताकी हसते हुये नकिले दम

ये अंधेरा घना छा रहा, तेरा इन्सान घबरा रहा

हो रहा बेख़बर, कुछ ना आता नज़र, सुख का सूरज छुपा जा रहा

है तेरी रोशनी में जो दम, तो अमावस को कर दे पूनम

बड़ा कमजोर है आदमी, अभी लाखों हैं इस में कमी

पर तू जो खड़ा, है दयालू बड़ा, तेरी क्रपिा से धरती थमी

दयिा तूने हमें जब जनम, तू ही झेलेगा हम सब के ग़म

जब जुल्मों का हो सामना, तब तू ही हमें थामना

वो बुराई करे, हम भलाई भरे, नहीं बदले की हो कामना

बढ़ उठे प्यार का हर कदम और मटि बैर का ये भरम

TIME

Time is a special bank. It credits your account each day with twenty four hours. Every evening you lose the balance, if you fail to use it during the day. You can gain interest by utilising it. If you fail to use the day's deposits, the loss is yours. There is no going back. Every minute is precious and you have to use it to attain eternal bliss. Time is freely available but it is precious."

अगर आपको कुछ कहना है या पत्रिका शूभशछीभे करनी है

कृप्या निम्न address पर सम्पर्क करें

भारतेन्दु सूद, 231 सैक्टर– 45–ए चण्डीगड़.160047

0172.2662870, 9217970381, E mail : bhartsood@yahoo.co.in

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।

जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट(Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें

पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। Book is in English

कहानियां धार्मिक नहीं परन्तु जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी है। Stories are on various aspects of human life.

नीला सूद, भारतेन्दु सूद

0172–2662870, 9217970381

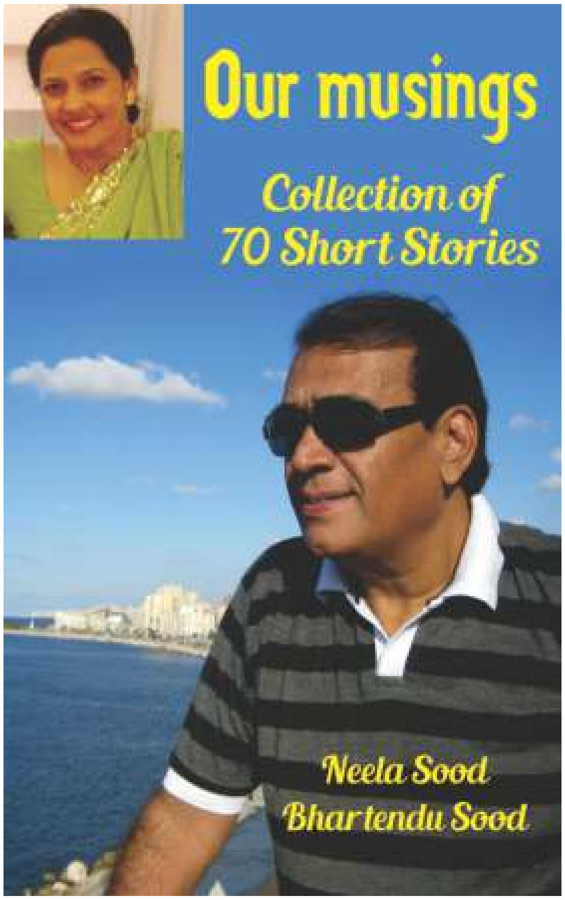

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

A few things which you learn with age, earlier you learn better it is

As we grow older, and hence wiser, we slowly realize that wearing a Rs 10000. or Rs300.00 watch - - - - - -they both tell the same time...

Whether we carry aRs 10000 or Rs300.00 wallet/handbag - - - - the amount of money inside is the same;

Whether the house we live in is 300 or 3000 sq.ft. - - - - - - - - - the loneliness is the same.

You will realize, your true inner happiness does not come from the material things of this world.

Whether you fly first or economy class, if the plane goes down - - - - - -you go down with it...

Therefore..I hope you realize, when you have mates, buddies and old friends, brothers and sisters, who you chat with, laugh with, talk with, have sing songs with, talk about north-south-east-west or heaven earth, ... That is true happiness!!

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

महर्षि दयानंद का जन्म दिवस हम ऐसे भी मना सकते हैं

1 उस दिन हर एक आर्य समाज कोई न कोई परोपकार का कार्य करे। जैसे रक्त दान शिविर, किसी गरीब कालोनी में मैडिकल चैक अप शिविर, सामूहिक विवाह आदि।

2 लंगर हो न कि प्रीती भोज। लंगर वह है जहां सभी न केवल धन द्वारा परन्तु सेवा द्वारा अपना सहयोग दे। जहां आप उत्सव मना रहें हैं वहां तों लंगर हो ही पर लंगर का एक बड़ा हिस्सा स्थानिय अस्पताल के बाहर बांटा जाये। चंडीगड़ में P.G.I और सैक्टर 32 अस्पताल के बाहर आप हर रोज किसी न किसी सस्था द्वारा लंगर का आयोजन देख सकते हैं। सिर्फ आर्य समाज ही ऐसी सस्था है जो कभी आयेजन नहीं करती। यदि एक आर्य समाज नहीं कर सकती तो 3–4 आर्य समाज मिल कर कर सकते है। कम से कम वह संस्था जिस के 12 आर्य समाज व अरबों की जायदाद चंडीगढ़, पुचकुला मोहाली में है कम से कम, साल में एक बार अपने संस्थापक के जनमदिवस पर तो कर सकती है। सब से आवश्यक हैं कि लंगर सादा हो, न कि प्रीती भोज।

जब हम ऐसे कार्य करते है तो लोगों को भी पता लगता है।

दूर दूर से संस्कुत के विद्वान बुलाने और सुरीली आवाज में गाना गाने वालों पर पैसा न खर्च करे। उस दिन सुनने की बजाये दयानंद की बाते साधारण लोंगों की भाषा में लोगों को सुनाये। कितनी बार सुनेंगे उन्हीं बातों को। अगर आर्य समाज को जीवित रखना हैं तो आज समय है कि दयानंद की बातों को लोंगों को बतायें। छुक छुक रेल चली है जीवन की गाना––कितनी बार सुनेंगे। आर्य समाजों का आयोजन आज ऐक नोटंकी बन कर रह गया है। जिस सन्यासी को दूर स्थान से बुलाया है उसे तो 15 मिन्ट वह भी मुश्किल से समय दिया जाता है, सामने स्टेज पर एक मूर्ती की तरह सजा दिया जाता है। । और सुरिली आवाज में फिल्मों के गानों की तर्ज पर गाना गाने वाले चाहे एक घंटा गाते जाये, और फिर भी आवाज आती है ऐक और, एक और। यह नोटंकी नही तो और क्या है। आर्य समाज को एक मनोरंजन का स्थान न बनाकर समाज रहने दें जहां कि समाज की बात हो।

आर्य समाज विचारों के लिये जाना जाता था, लोग विद्वानों के उपदेश सुनने आते थे और समाज के पढ़े लिखे उच्च वर्ग के लोग आते थे। आज आपको शायद ही कोई नया बुद्वजीवि नजर आये।

स्थानिय अखवारों में विज्ञापन सपलीमैंट दें। जब हम यह करेंगे तो वह लेख भी छापेगे। जन साधारण को यह पता लगे कि जिस व्यक्ति ने सारे देश को एक नई दिशा दी वह अभी पूरी तरह भुलाया नहीं गया है। अंग्रेजी के विरोद्ध को मन से निकाल दें। आज पढ़े लिखे बच्चे सभी अग्रेजी में पढ़ते हैं। इसलिये अंग्रेजी के समाचार पत्रों को महत्व दें। उन में विज्ञापन सपलीमैंट और लेख दें।

सब से अच्छी बात यह होगी कि सभी आर्य समाजे मिलकर एक खुले स्थान पर जैसे सैक्टर 34 का वहां पर आयेजन करें। इन आर्य समाजों में वही गिने चुने 100 आर्य समाजी ही आते हैं। कार्यक्रम छोटा हो, 2–3 घंटे में खत्म हो जाये। दो अच्दे वक्ता एक–एक घंटा बोलें। स्टेज पर अधिकारियों की नमाईश न करें।

रिश्तों में फासले

मियां-बीबी दोनों मिल खूब कमाते हैं
तीस लाख का पैकेज दोनों ही पाते हैं
सुबह आठ बजे नौकरियों परजाते हैं
रात ग्यारह तक ही वापिस आते हैं
.
अपने परिवारिक रिश्तों से कतराते हैं
अकेले रह कर वह कैरियर बनाते हैं
कोई कुछ मांग न ले वो मुंह छुपाते हैं
भीड़ में रहकर भी अकेले रह जाते हैं
.
मोटे वेतन की नौकरी छोड़ नहीं पाते हैं
अपने नन्हे मुन्ने को पाल नहीं पाते हैं
फुल टाइम की मेड ऐजेंसी से लाते हैं
उसी के जिम्मे वो बच्चा छोड़ जाते हैं
.
परिवार को उनका बच्चा नहीं जानता है
केवल आया'आंटी' को ही पहचानता है
दादा -दादी ,नाना-नानी कौन होते है?
अनजान है सबसे किसी को न मानता है
.
आया ही नहलाती है आया ही खिलाती है
टिफिन भी रोज़ रोज़ आया ही बनाती है
यूनिफार्म पहना के स्कूल कैब में बिठाती है
छुट्टी के बाद कैब से आया ही घर लाती है
.
नींद जब आती है तो आया ही सुलाती है
जैसी भी उसको आती है लोरी सुनाती है
उसे सुलाने में अक्सर वो भी सो जाती है
कभी जब मचलता है तो टीवी दिखाती है
.
जो टीचर मैम बताती है वही वो मानता है
देसी खाना छोड कर पीजा बर्गर खाता है
वीक ऐन्ड पर मौल में पिकनिक मनाता है
संडे की छुट्टी मौम-डैड के संग बिताता है
.
वक्त नहीं रुकता है तेजी से गुजर जाता है
वह स्कूल से निकल के कालेज मेंआता है

कान्वेन्ट में पढ़ने पर इंडिया कहाँ भाता है
आगे पढाई करने वह विदेश चला जाता है
.
वहाँ नये दोस्त बनते हैं उनमें रम जाता है
मां-बाप के पैसों से ही खर्चा चलाता है
धीरे-धीरे वहीं की संस्कृति में रंग जाता है
मौम डैड से रिश्ता पैसों का रह जाता है
.
कुछ दिन में उसे काम वहीं मिल जाता है
जीवन साथी शीघ्र ढूंढ वहीं बस जाता है
माँ बाप ने जो देखा ख्वाब वो टूटजाता है
बेटे के दिमाग में भी कैरियर रह जाता है
.
बुढ़ापे में माँ-बाप अब अकेले रह जाते हैं
जिनकी अनदेखी की उनसे आँखें चुराते हैं
क्यों इतना कमाया ये सोच के पछताते हैं
घुट घुट कर जीते हैं खुद से भी शरमाते हैं
.
हाथ पैर ढीले हो जाते,चलने में दुख पाते हैं
दाढ़- दाँत गिर जाते,मोटे चश्मे लग जाते हैं
कमर भी झुक जाती,कान नहीं सुन पाते हैं
वृद्धाश्रम में दाखिल हो,जिदा ही मर जाते हैं
.
सोचना की बच्चे अपने लिए पैदा कर रहे हो
या विदेश की सेवा के लिए।
बेटा एडिलेड में,बेटी है न्यूयार्क।
ब्राईट बच्चों के लिए,हुआ बुढ़ापा डार्क।
.
बेटा डालर में बंधा, सात समन्दर पार।
चिता जलाने बाप की, गए पडौसी चार।
ऑन लाईन पर हो गए, सारे लाड़ दुलार।
दुनियां छोटी हो गई,रिश्ते हैं बीमार।
.
बूढ़ा-बूढ़ी आँख में,भरते खारा नीर।
हरिद्वार के घाट की,सिडनी में तकदीर।
तेरे डालर से भला,मेरा इक कलदार।
रूखी-सूखी में सुखी,अपना घर संसार।

Rakesh Bhargava,
Branch Manager
Ammonia Supply Company,
D-four, Industrial
Focal Point, Dera Bassi,

रागों का उपचार करना और स्वस्थ रहना है तो बागवानी कीजिए

सीताराम गुप्ता,

मौसम करवट बदल रहा है। चारों तरफ रंग–बिरंगे फूलों की बहार है। नंग–धड़ंग हो गए पेड़ों के कठोर जिस्मों ने भी कोमल–कमनीय पत्तियों का लिबास धारण कर लिया है। लोग बाग़–बग़ीचों की सैर को उतावले हो रहे हैं। नई दिल्ली में राष्ट्रपति भवन स्थित मुग़ल गार्डन, गार्डन ऑफ़ फाइव सेंसिज़, पिंजौर स्थित यादवेंद्र गार्डन, चण्डीगढ़ स्थित रोज़ गार्डन तथा देश के दूसरे प्रमुख उद्यान अपने उद्यानोत्सवों के माध्यम से लोगों को आमंत्रित कर रहे हैं। वसंत का सम्मोहन लोगों के सर पर चढ़कर बोल रहा है। ऐसे में मनुष्य स्वयं एक नई ऊर्जा से अनुप्राणित होकर कुछ नया, कुछ विचित्र करने की दिशा में अग्रसर हो रहा है तो कैसा आश्चर्य?

लेकिन क्या कारण है इस परिवर्तन का? इस परिवर्तन का कारण है पेड़–पौधों के माध्यम से प्रकृति का स्पर्श। विभिन्न प्रकार के पेड़–पौधों, वनस्पतियों, साग–सब्ज़ियों तथा फल–फूलों को उगाना, उनकी देखभाल करना, जो एक विज्ञान ही नहीं एक कला भी है, जैसे बाग़बानी, पुष्पोत्पादन, फलोत्पादन या सब्ज़ियों की खेती आदि न केवल एक अच्छी हॉबी या शौक़ है अपितु एक उपचारक पद्धति भी है। प्रकृति अथवा पेड़–पौधों का सामीप्य न केवल पर्यावरण प्रदूषण को सोखकर हमें स्वच्छ परिवेश उपलब्ध कराता है अपितु हमारे तनाव, दुष्चिंता, क्रोध और कुंठा जैसे नकारात्मक मनोभावों को अपने में सोखकर हमें सकारात्मक ऊर्जा तथा मनोभावों से ओतप्रोत कर देता है।

पौधों को उगाना, उनकी देखभाल करना और उनकी पैदावार से लाभ कमाना एक व्यवसाय हो सकता है लेकिन यह एक रचनात्मक कार्य भी है विशेष रूप से शौक़िया बागवानी या गमलों में पौधे उगाना और रचनात्मक कार्य से न केवल हमारे ऊर्जा के स्तर में वृद्धि होती है बल्कि जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी हमारी क्षमता और कार्य कुशलता में वृद्धि होती है। जब हताशा हावी हो जाए, निराशा से नींद न आए और अवसाद का अंत न हो तो ऐसे में शरीर के तने हुए तंतुओं को तनाव रहित करने के लिए तथा मन–मस्तिष्क को शांत करने एवं संयत रखने के लिए मनोचिकित्सक अब खेती–बाड़ी और बाग़बानी करने का परामर्श देते हैं।

ऑक्यूपेशनल थैरेपी या व्यायसायिक चिकित्सा में सिलाई–कढ़ाई, टोकरी बुनना, दरी–कालीन बुनना, मिट्टी अथवा धातु से मूर्तियाँ बनाना, लकड़ी, बाँस अथवा बेंत का सामान बनाना या चित्रकला आदि सहायक होते हैं लेकिन बाग़बानी इन सबमें महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें हमारी रचनात्मकता के स्तर में वृद्धि के साथ–साथ प्रकृति से भी हमारा जुड़ाव हो जाता है। बीजों से अंकुर निकलना, कलमों

की गाँठों से पत्तियाँ विकसित होना, पौधों का बढ़ना, निरंतर नई–नई पत्तियों का आना और उनके रंग में परिवर्तन होना, कलियों का दृष्टिगोचर होना तथा फूलों का खिलना ये सब ऐसी क्रियाएँ हैं जिनका अवलोकन हमें प्रकृति से जोड़ कर हममें एक नई स्फूर्ति, एक नई चेतना भर देता है।

सर्दियों में पत्र–पुष्प विहीन कोई ठूँठ–सा लगने वाला पौधा जब वसंत ऋतु का स्पर्श पाकर गाँठ दर गाँठ फूटने लगता है, पल्लवित–पुष्पित होकर अपनी छटा बिखेरने लगता है तो उसे देख कर हमारा मन भी पल्लवित–पुष्पित होने लगता है। हमारी कल्पनाशीलता का विकास होता है तथा रचनात्मकता के स्तर में वृद्धि होती है। मन प्रसन्न होने लगता है। मन प्रसन्न हो तो तन के प्रसन्न अर्थात् स्वस्थ होने में देर नहीं लगती। प्रकृति अपने नए–नए रूपों में प्रकट होने लगती है। प्रकृति की इस अनुपम रचनात्मकता को देखकर

हम स्वयं रचनात्मक होने लगते हैं, एक कलाकार बन जाते हैं और पुनः दुगने वेग से पौधों की देखभाल में जुट जाते हैं। मैंने अपने जीवन में जो पहली कविता लिखी थी वह पौधों की देखभाल के दौरान ही निःसृत हुई थी।

पौधों की देखभाल, कटाई–छँटाई उचित मात्रा में खाद–पानी देना, उनको सलीक़े से रखना तथा सजाना–सँवारना हमारे स्वंय के अंदर एक सुव्यवस्था को उत्पन्न कर देता है। हम अपने जीवन में अधिकाधिक व्यवस्थित होने लगते हैं और इस सब का हमारे स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। पौधों की कटाई–छँटाई अथवा प्रूनिंग और उसके बाद नई–नई कोंपलों का विकसित होना इस बात का प्रतीक है कि हम अपने मन में समाए नकारात्मक तथा अनुपयोगी विचारों से मुक्त होकर उनके स्थान पर उपयोगी सकारात्मक विचारों को ग्रहण करने के लिए तत्पर हैं। 'योग' में वर्णित यम ओर नियम की तरह जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण के विकास के लिए यह अनिवार्य है।

प्राकृतिक सौंदर्य से अभिभूत होना स्वाभाविक है अतः हम प्रकृति का सान्निध्य पाने के लिए सदैव तत्पर एवं उद्यत रहते हैं और यदि बाग़बानी के रूप में इस प्राकृतिक सौंदर्य का निर्माण हम स्वयं करते हैं तो हमें अद्वितीय आनंद की प्राप्ति होती है। यदि हम अपने रहने के कमरे में बनावटी पौधों की जगह यदि वास्तविक पौधे रखते हैं हमारे पूरे परिवार के स्वास्थ्य और चिंतन पर इसका अत्यंत सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इससे हमें न केवल प्राकृतिक परिवेश मिलता है अपितु ऑक्सीजन के रूप में अधिकाधिक मात्रा में जीवनदायिनी ऊर्जा भी प्राप्त होती है। हमारी प्राणदायिनी शक्ति अथवा ऊर्जा के स्तर में वृद्धि का सीधा सा तात्पर्य है हमारा अधिकाधिक स्वस्थ तथा उत्साहपूर्ण होना।

पेड़–पौधों द्वारा मनोरोगों का उपचार करने के लिए अमरीका के गैटिस्बर्ग मैरीलैंड में अमरीकन हॉर्टीकल्चर थैरेपी एसोसिएशन नामक समिति का गठन किया गया है जिसने इस क्षेत्र में कई महत्त्वपूर्ण प्रयोग और शोधकार्य किए हैं। प्रयोगों और शोधकार्यों के आधार पर समिति का दावा है कि मिट्टी की मनभावन महक भी मन–मस्तिष्क एवं स्नायुतंत्र पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। जंगली खर–पतवार की कटाई–छँटाई से अवसाद कम होता है और गहन हरीतिमा तथा प्रतिदिन बढ़ते पेड़–पौधे निराशा को दूर कर जीवन के प्रति आशा तथा उत्साह का संचार करने में पूरी तरह सक्षम होते हैं। प्रकृति के सान्निध्य से लाभांवित होकर अद्वितीय आनंद की प्राप्ति करने तथा पूर्ण रूप से स्वस्थ एवं उत्साहित बने रहने के लिए आज ही बाग़बानी को अपनी जीवन शैली का अनिवार्य अंग बना लीजिए।

ए.डी.–106–सी, पीतमपुरा, दिल्ली–110034, फोन नं. 09555622323

राष्ट्रिय मंच पर कोई बात हो हम आर्य समाजी बहुत फकर से कहते हैं –– लाला लाजपत राय कटर आर्य समाजी थे। उनकी इस बात को दौहरातें हैं–––आर्य समाज मेरी मां है और स्वामी दयानंद मेरे पिता। पर अभी जब उनकी 150 वीं जन्मशताब्दी हुई तों किसी आर्य समाज में उत्सव तो छोड़ो याद भी नहीं किया गया । हां एक अमृतसर के भजनोपदेशक हैं उनको पिछले दो सालों में कम से कम 30 बार विभिन्न आर्य समाजों ने अभिन्नदन किये। जो मांग कर आनी दक्षिणा(professional fee) लेते हैं उनके तो अभिननदन करते हैं उन्ही के नहीं उनके तवलची का भी करते है जो कि आर्य समाजी नहीं होता, और जिन्होने देश, समाज और आर्य समाज के लिये सब कुर्वान कर दिया उन का नाम भी नहीं। ऐसे समाज खत्म हो जाते है।

अच्छे संस्कार क्या है?

भारतेन्दु सूद

अभी कुछ दिन पहले मैं शिमला गया था मेरे पास कुछ ऐसा सामान था जो कि मुझे अगले चक्कर में भी चाहिये था, मैने सोचा वापिस ले जाने से अच्छा है कि किसी के यहां रख दूं। अचानक मुझे याद आयां कि मेरे बचपन के सहपाठी की दुकान पास में ही है। वहां पहुंचा तो उनके दूसरे भाई दुकान में थे जो मुझे पहचानते थे। मैने उनसे सामान रखने का अनुग्रह किया। वह बोले––यह भी कोई बात हैं आप बेफिक्र हो जाईये। चाय आदि के बाद बोले–––आप चण्डीगड़ वापिस कैसे जा रहे हो? मैने बता दिया मैं बस से जा रहा हूं। सुनकर उन्होने कहीं फोन किया जो इस प्रकार था––––भोलू ! तेरे ताया जी तेरे पास आ रहे हैं तूने उनको चंडीगड़ छोड़कर आगे निकलना।

फिर मुझ से बोले––भाई साहब मेरा बेटा भोलू जिरकपुर के लिये निकलनेवाला है। आप उसके साथ निकल जायें अच्छा रहेगा, वह दूसरी दूकान पर है, आपके दो मिन्ट लगेंगे। उनके कहने का ढंग देखकर मेरा मन गदगद था ––––''तेरे ताया जी तेरे पास आ रहे है''––––कोई दूसरा व्यक्ति पहली बात तो कहता ही नहीं और अगर दिल करता भी तो पहले डरता डरता बेटे से पूछता क्योंकि जैसे कि आजकल हालात हैं, तीसरा––ऐसे भी कह सकता था––मेरे किसी जानने वाले को चण्डीगड़ छोड़ देना। फर्क केवल संस्कारों का है। दो मिन्ट में उनकी दूसरी दूकान पर पहुंचा, वह निकलने वाला ही था। मैने शिष्टाचार के नाते उनके बेटे से कहा कि मैं आप की privacy disturb नहीं करना चाहता, पास ही बस स्टैंड है,मैं बस से निकल जाउंगा। उसने बड़ी विनर्मता से कहा––अंकल आप क्या बात कर रहें हैं। मेरे पापा ने मुझे आप के लिये फोन किया है। फिर मैं हू, आप हैं और डराईवर है, इस में privacy कहां आती है। जब हम कुछ भी कहते हैं उसी में हमारे संस्कार झलक जाते है। पर उन सब के लिये बच्चें के साथ समय खर्च करना पड़ता है और हमें अपना व्यवहार भी उनके सामने वैसा ही रखना आवश्यक है। सब से पहले जो प्रश्न मन में आता है कि संस्कार क्या हैं? क्या यह किसी धर्म या मत से जुड़े हुये हैं। मेरे अनुसार संस्कार वे अच्छे गुण है जो समय के अनुसार बदलते नहीं और जिन के बारे में हम आश्वस्त होते हैं कि ये जीवन को अच्छा बनातें है, सुखमय बनाते है और निखारतें है और इसी कारण अपने बच्चें का आने वाला जीवन, उनकी आदतें और व्यवहार अच्छा बनाने के लिये हम उन्हे अपने बच्चों को भी देना चाहते है। मेरे अनुसार ये किसी मत सामुदाय के सथ जुड़े हुये नहीं पर कुछ मत इसके लिये खास प्रयत्न करते हैं। उदाहरण के लिये कुछ मतों में बच्चों को यह शपथ दिलाई जाती है कि किसी भी प्रकार के नशे का, 'शराब का मांस का प्रयोग नहीं करेंगे। इसी प्रकार, पितृ यज्ञ, अतिथि

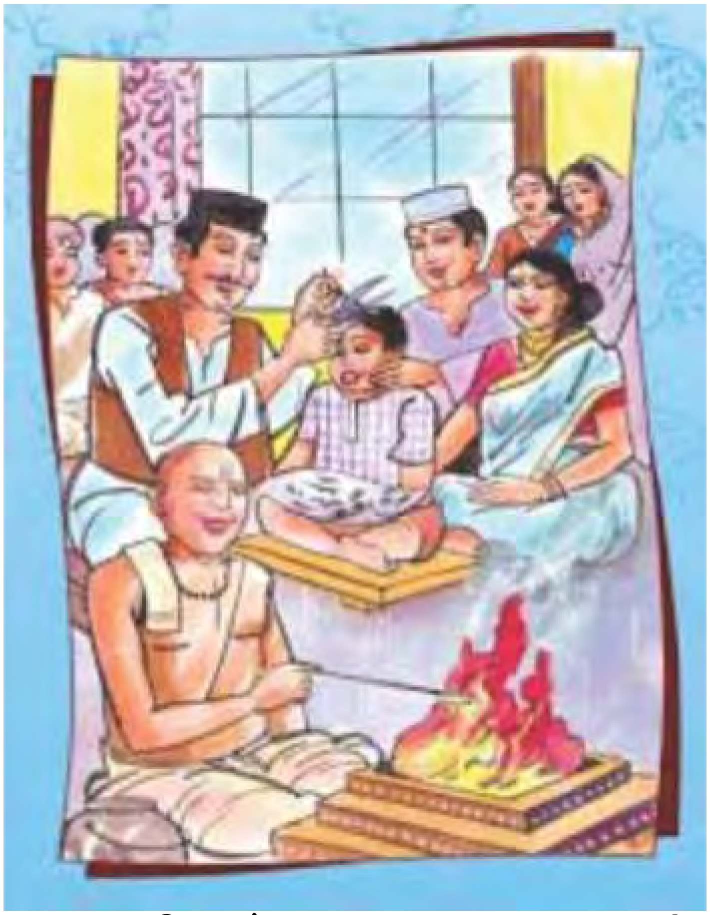

संस्कार पंड़ित को बुलाकर हवन, पूजा–पाठ नहीं है। संस्कार है बच्चों को ऐसे गुण देना जो कि उसके आने वाले जीवन में ना केवल उसे ही सुख दें बल्कि उसके सम्पर्क में आने वाले सभी को सुख व आनन्द दें।

यज्ञ, या संध्या प्रार्थना जिसे में बच्चा धन्यवाद करना या कृतज्ञ होना सीखता है भी कुछ मतों का हिस्सा हैं। जब हम बच्चे को भारतीय परम्परा के अनुसार कहते हैं कि आप ने अपने से बड़ों के पैर छूने है, यह इस बात को बताता है कि आप चाहते हैं कि आपका बच्चा बड़ों की इज्जत करे और जब वह बड़ों की ईज्जत करना सीख जाता है जो उसके जीवन में नीखार स्वभाविक है और वह समाज में यश का पात्र बनेगा। पर यह सोचना भी गलत है कि केवल पैर छूने से ही बड़ों की इज्जत हो जाती है या फिर हम ही भारत में बड़ों की इज्जत करना सिखाते हैं, बड़ों की इज्जत करना सारे विश्व की परम्परा है। हां चिन्ह अलग हो सकते हैं। यह अलग बात है हम दूसरे कर्मकाण्डों में अपने आप को लीन कर इनका महत्व नहीं समझ पाये और इन को उचित स्थान नहीं दे पा रहें हैं। र्महर्शि दयानंद के अनुसार हमारी शिक्षा और संस्कार ऐसे हों जिससे विद्या, सभ्यता बढ़े, अविद्या के दोष दूर हों और हम धर्मात्मा और जितेन्द्रिय बने। धर्मात्मा का सीधा अर्थ है हम धर्म के नियमों का पालन करने वाले बने और जितेन्द्रिय का अर्थ है, हम अपनी इन्द्रियों को बस में करने वाले बने।

संस्कारों को हम अपने समझने के लिये दो श्रेणीयों में बांट सकते हैं। पहले वे जो सर्वभौमिक हैं। विश्व में कहीं भी चले जाओं वे बदलते नहीं, जैसे की सत्य बोलना और बड़ों का आदर करना आदि। दूसरे वे जो कि भगौलिक जैसे कि जिस देश में मांस, खाने का मुख्य हिस्सा है वहां हम माता पिता से यह अपेक्षा नहीं कर सकते कि बच्चे को यह बतायें कि मांस का प्रयोग गलत है। यह हाल हमारे देश के तटीय स्थानों का भी है वहां बच्चा मछली पर ही पलता है। यह ज्ञान ही नहीं हैं कि प्राणी का जीवन लेकर उसको खाना गलत है। पर यह बात अवश्य है कि जो माता पिता करते हैं या जो उनकी आदतें होती हैं अक्सर उनका सीधा प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। इस लिये यह कहना गलत नहीं कि बच्चें को संस्कार देने में सब से अहम भूमिका माता पिता की हैं फिर भी माता पिता के तौर पर कुछ बातें जो हमें बच्चों को अवश्य सीखानी चाहिये वे मेरे ख्याल में यह हैं?

सत्संग

जितना बच्चे को बनाने में सत्सग सहायता करता है उतना शायद और कोई चीज नहीं । पहला सत्संग का स्त्रोत है माता पिता। जितना अधिक माता पिता बच्चे को समय देंगे उतना ही अच्छा हैं। शिक्षित माता पिता सोने पर सुहागे का काम करते हैं। पर अगर शिक्षित होकर भी बच्चे को समय नहीं देते तो यह बच्चे के साथ बहुत बड़ा अन्याय है। दूसरा स्त्रोत है धार्मिक विद्वानों, जो कि तपस्वी और त्यागी हो, के प्रवचन और उपदेशं। बच्चे को किसी अच्छे मन्दिर, गुरद्वारा में ले कर जायें और वहां पर बच्चा कुछ समय बिताये और सेवा के काम में लगे। तीसरा स्त्रोत है अच्छी धार्मिक पुस्तकें, महापुरूषों की जीवनियों का अध्यन।

ईमानदार रहना और अपनी आत्मा की आवाज को सुनना

बच्चे को पहली शिक्षा हम 'यह दें कि वह अपने साथ और दूसरों के साथ ईमानदार रहे। यह तभी सम्भव है जब वह सत्य को जीवन में अपनाता, जीवन की 'शैली बनाता हैं, अपनी आत्मा की आवाज को सुनता हैं और वह अनैच्छिक दवावों से स्वतन्त्र हैं । आज भी ईमानदारी और सत्य पर चलने वाले बहुत से व्यक्ति हैं पर अक्सर आप पायेंगे यह शिक्षा उन्होने अपने माता पिता के चरित्र से ली। आर्य समाज के 10 में से 6 नियम सत्य को जीवन में अपनाने पर ही जोर देते हैं। आर्य समाज ही नहीं, सत्य को हर किसी ने धर्म का मु,ख्य अंग माना है। बच्चे को न्याय के प्रति जागरूक बनना सिखायें। यही नहीं, जहां वह अन्याय देखता है तो वह अपनी आवाज भी उठाये।

अपने और दूसरों के प्रति प्यार और आदरभाव।

एक बात जो हमें अपने वच्चों में अवश्य डालनी चाहिये वह है बड़ों का आदर करना। परन्तु बड़ों का आदर केवल मात्र उनके पैर छूने से नहीं होता। बड़ों का आदर तब होता है जब वह उनका कहना माने, उनकी बातों को सुने और उनके पास समय वितायें, उनके दिल को न दुखायें और उनकी जरूरतों का ख्याल रखें। इसके साथ यह भी आवश्यक है कि बच्चा अपना भी आदर करे, अपने को हीन भावना से न देखे। यह तभी है जब हमे जो ईश्वर ने दिया है या प्रकृति ने दिया है उस का आदर करें और उस से संतुष्ट रहें । न कि अपने से उपर या सम्पन्न व्यक्तियों को देखकर हीन भावना का शिकार बच्चों को बना दे। अपने से नीचे वालों को भी देखें और उन से मिलने और उनका आदर करने की आदत बच्चे में अवश्य डालें। यह जीवन में सफलता और खुश रहने की कुंजी है।

बच्चे को संवेदनशील बनाना

संवेदनशीलता एक ऐसा गुण है जो व्यक्ति को महात्मा बना देता है। यदि आप ने वच्चे को संवेदनशील बना दिया तो वह डाक्टर, न्यायधीश, I.A.S बने न बने पर एक सफल और अच्छा व्यक्ति अवश्य बन जायेगा। संवेदनशीलता ने ही मोहनदास को महात्मा गान्धी और कैलाश सत्यार्थी को नोवेल पुरस्कार विजेता बना दिया। जो मैं कर रहा हूं, उस से

दूसरों पर क्या असर पडेगा या अपने आप को दूसरों की जगह दे कर सोचना ही संवेदनशीलता का आधार है। बच्चे को अपने से कमज़ोर की सहायता, और आदर करना सिखायें, उन्हें जन्मदिन आदि पर बुलाकर आदर दें या उनके जन्मदिन पर कुछ तोहफा दे कर अपनेपन का ऐहसास दें। एक महान व्यक्ति अपने बेटे को शिक्षा देता है कि तुम दर्जी की सूई की तरह बनो जो कि हर कपड़े को विना कोई भेद भाव किये सिल देती है। आज की शिक्षा की सब से बड़ी कमी

यह है कि अमीर बच्चे एक स्कूल में पढ़ते हैं और गरीब बच्चे दूसरे में, जिस कारण एक दूसरे को समझना और प्यार का भाव होना मुश्कित हो गया है। 40 वर्ष पहले तक ऐसा न था, गरीब अमीर सभी ऐक ही विद्यालय में पढ़ते थे, जो कि एक दूसरे को समझने और संवेदनशीलता लाने में बहुत सहायता करता था। बहुत सारे तो 'यह कह कर बच्चे का दाखिला नहीं दिलवाते कि crowd अच्छा नहीं हैं। जो कि बहुत गलत सोच है। वे भूल जाते हें कि बड़े होकर भी तो सब तरह के लोगों के साथ काम करना पड़ेगा। आज कौन सा ऐसा काम है राजनैतिज्ञ से सरकारी नौकर तक, जिस में आप को समाज के सब से छोटे वर्ग के आदमी के साथ नहीं चलना पड़ता । जो बच्चे सब तरह के बच्चों में शुरू से ही रहते हैं, उनके जीवन में सफल होने के मौके दूसरे बच्चें की अपेक्षा कहीं अधिक होते हैं क्योंकि वे संवेदनशीलता का पाठ सीख लेते हैं।

Thoughtful people never miss out on an opportunity to brighten up the lives of others, even if they are complete strangers. They let a little child in the compartment take their window seat, they give way for the elderly at exit points, they stop for harried pedestrians, they give another guest in the file the last cheese cake of the buffet. They seem to be drunk with the wisdom that such acts bring mirth for many people, including themselves!

बच्चे को हार जीत से उपर उठायें

हर बच्चा प्रथम नहीं आ सकता इसलिये आवश्यक यह है कि बच्चा हार जीत की चिन्ता किये बिना, मेहनत और ईमानदारी के रास्ते को अख्तयार कर हिस्सा लेना सीखे। कोई भी जीत आखरी जीत नहीं। हम सोचते है कि बच्चे को अच्छे कालेज में दाखला मिल गया या अच्छी नौकरी मिल गई तो उसका जीवन कामयाब हो गया यह हमारी सोच गलत है। हम अपना जीवन ही देंखे। पहली सफलता चिरस्थाई नहीं थी जीवन के हर मोड़पर चुनोतियां अलग अलग हैं । अगर आप ने बच्चे को यह सिखाया है कि न तो वह किसी सफलता से बहुत खुश हो न ही कोई भी हार उसका हतोसाहित कर दे तो ख्याल रहे आप ने उस को बहुत बड़ा सबक दे दिया। जरूरत इस बात को बताने की है कि वह पूरी लगन से व इमानदारी से हर काम को करे ओर करते हुये अपनी शारीरिक, मानसिक और अध्यात्मिक उन्नति से नजर दूर न करे। साथ ही सुनने वाला व सोच कर अच्छा बोलने वाला भी बने।

ज्ञान और सूचना का महत्व

आज के युग में केवल मात्र कोई डिगरी हासिल कर लेने से काम नहीं चलता। आवश्यकता यह है कि बच्चा हर कदम पर अपने ज्ञान को बढ़ाता जाये और नई developments से अवगत रहे। घर बैठ के समय काटने वाला न हो वल्कि बाहर निकल कर कुछ करे। व्यक्ति हर काम करते हुये कुछ सीखता है। जो भी वयक्ति उपर पहुंचते हैं उनका जीवन संघ□मय रहा होता है। वे कभी खाली बैठ कर रिजल्ट का इन्तजार नहीं करते। वे कुछ न कुछ काम ढूंढ लिया करते है। मेरे ख्याल में जो बच्चे हर समय मोवाईल और इन्टरनैट के सामने बैठे रहते है उन की अपेक्षा वह बच्चे जो बाहर जा कर काम सीखते है करते है वे कहीं अधिक व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करते है।

हमारे सामने कई दरवाजे खुले होते है।

कोई भी परिस्थिति हो, हमारे सामने कई दरवाजे खुले होते है पर मुश्किल यह है कि हम अक्सर उसी दरवाजे को देखते रहते हैं जो बन्द होता है। हमारा जीवन यहीं आ कर रूक जाता है। कोई बात नहीं अगर डाक्टरी में दाखला न हुआ। दूसरे भी तो इतने टरेड हैं। क्यों न उसके बारे में भी सोचे। यह शिक्षा भी बच्चे को देना बहुत आवश्यक हैं।

रजि. नं. : 4262/12 ।। ओ३म्।। फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

Shivi and her friend with children

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है् :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

मधुकर कौड़ा लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

SSaroj Bale

neelam Khurana

Sudesh Gupta

Usha Kakar

Rajinder Rani Verma

Madhu Jasuja

Vishvabandhu

Vikram Viveki

Vijay Pal Shastri

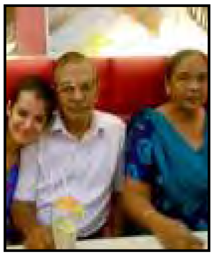

Suresh Gupta with family

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2013-2015

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years
in service

DIPLAST
DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870